मस्तुरी विकास खंड में प्रवासी मजदूरों का प्राथमिक सर्वेक्षण प्रतिवेदन

छत्तीसगढ़ के बिलासपुर जिले के मस्तुरी विकास खंड से पलायन कर दूसरे जिलों या राज्यों में मौसमी मजदूरी के लिए जाने वाले नागरिकों की पारिवारिक एवं पलायन संबंधित विशेषताओ की जानकारी प्राप्त करने हेतु एक प्रश्नावली सर्वेक्षण किया गया . यह सर्वेक्षण माह फ़रवरी २०१०- मार्च २०१० के बीच विशेष रूप से प्रशिक्षित समूह द्वारा किया गया. वर्तमान प्रतिवेदन में इस सर्वेक्षण से प्राप्त जानकारी का प्राथमिक विश्लेषण प्रस्तुत किया जा रहा है.

शोध विधि : अध्ययन हेतु बिलासपुर जिले के मस्तुरी विकास खंड में १० ग्राम पंचायतों का चयन किया गया. इन ग्राम पंचायतो का चयन कुल १०६ ग्राम पंचायतो में से किया गया . चयन हेतु विकास खंड को पांच भोगोलिक क्षेत्रो मे बाटा गया एवं प्रत्येक भोगोलिक क्षेत्र से ०२ ग्राम पंचायतो का चयन किया गया. प्रत्येक ग्राम पंचायत के समस्त परिवारों की सूची आँगन बाड़ी केन्द्रों से एकत्रित की गयी. प्रत्येक ग्राम पंचायत से न्यूनतम १८० एवं अधिकतम २२० परिवारों का चयन किया गया. इन परिवारों का चयन आगनबाडी केन्द्रों से प्राप्त परिवारों की सूची से किया गया . "SYSTEMATIC SAMPLING METHOD

कुल सर्वेक्षित परिवार संख्या १९८८ रही. प्रति पंचायत चयनित परिवारों का विवरण सारणी क्रमांक १ में प्रस्तुत किया गया है.

मस्तुरी विकासखंड का संक्षिप्त परिचय : छत्तीसगढ़ आर्थिक एवं सामाजिक आधार पर भारत के सबसे अधिक पिछड़े राज्यों में से एक है. वर्ष २००० में तत्कालीन मध्य प्रदेश से अलग कर इसे एक पृथक राज्य का दर्जा दिया गया. मस्तुरी विकासखंड छत्तीसगढ़ के बिलासपुर जिले में स्थित है. इस जनसँख्या में से कुल कार्यशील जनसंख्या ४२.९% . कुल पुरुष कार्यशील जनसंख्या का प्रतिशत ४६.३६% है एवं कुल महिला कार्यशील जनसंख्या का प्रतिशत ३९.४४% है. इसमें से ५४. ४१% कृषक , २८.५३% कृषि मजदूर एवं २% खेतिहर मजदूर है. इस प्रकार लगभग ८५% जनसँख्या कृषि एवं इससे सम्बंधित कार्यो पर आजीविका हेतु निर्भर है.कुल १२७२१२ एकड़ क्षेत्र में कृषि होती है. इसमें से मात्र ८% कृषि क्षेत्र में ही वर्ष में दो फसले ली जाti है. मस्तुरी विकास खंड में कुल ग्राम १७३ एवं कुल ग्राम पंचायते १०७ है. वर्ष २००१ की जनगणना के अनुसार मस्तुरी विकास खंड की कुल जनसँख्या १.९९ लाख थी. जिसमे से पुरुषो की जनसँख्या १०० लाख एवं महिलायों की जनसँख्या ९९ लाख थी. जनसंख्या में २५.97% संख्या अनुसूचित जाति की, १३.४५ % जनसंख्या अनुसूचित जनजाति की थी. साक्षरता का कुल प्रतिशत ५०.१९% है. पिछले दशक में मस्तुरी की जनसंख्या वृद्धि दर काफी कम २.०९ % ही रही. मस्तुरी विकास खंड में शहरी जनसंख्या नहीं है एवं जनसंख्या का घनत्व शहरी क्षेत्र की तुलना मे अधिक है.

भाग 1 . सर्वेक्षित नागरिको की पारिवारिक विशेषताएँ

1.१ परिवार के मुखिया के अनुसार वितरण : सारणी क्रमांक १.१ में यह पाया गया की सर्वाधिक संख्या ८६.५% पुरुष प्रधान परिवारों की है , १२.१ % महिला मुखिया परिवार है एवं १.४% परिवार ऐसे है जिनकी मुखिया विधवाये है.

1.2 परिवारों की जाति के अनुसार वितरण : सारणी क्रमांक १.२ में प्रदर्शित किया गया है की सर्वाधिक (४५.४%) परिवार पिछड़े वर्ग के है. अनुसूचित जाति के परिवारों की संख्या भी काफी है : ३०.२% एवं जन जातीय परिवारों की संख्या २०.१ % है. सामान्य वर्ग के परिवार मात्र ३.१% ही है. सारणी क्रमांक १.७ से स्पष्ट है की सबसे अधिक पलायन पिछड़े वर्ग के परिवारों से हो रहा है. उसके पश्चात् क्रमशः अनुसूचित जाति एवं जनजाति से पलायन होता है . सामान्य वर्ग से पलायन नहीं के बराबर है.

1.३ राशन कार्ड के प्रकार के अनुसार परिवारों का वितरण: सारणी क्रमांक १.३ से स्पष्ट है की सर्वाधिक संख्या ५८.७% बीपीएल कार्ड धारित करने वालो की है.अन्त्योदय एवं अन्नपूर्णा कार्ड धारित करने वालो की संख्या क्रमश ९.२% एवं ३.५% है. ऐसे परिवारों की संख्या जिनके पास कोई कार्ड नहीं है १८.५% है.

1.४. पलायन की स्थिति के अनुसार परिवारों का वितरण : सारणी क्रमांक १.४ से स्पष्ट है की संदर्भ वर्ष २००९ में कुल सर्वेक्षित १९८८ परिवारों में से ४३२ अर्थात २१.२% परिवारों ने पलायन किया. सबसे अधिक पलायन क्रमशः जोंधरा (२२.९%) टिकारी(१४.६%) एवं सोंथी(१४.१ %) से हुआ. सबसे कम पलायन क्रमशः सीपत (0.९%) एवं जयरामनगर (१.२%) से हुआ.

1.५. जॉब कार्ड के आधार पर परिवारों का वितरण : सारणी क्रमांक १.५ से स्पष्ट है की बहुत बड़ी संख्या (४५.४%) में परिवारों के पास जॉब कार्ड नहीं है. सारणी क्रमांक १.६ से यह भी स्पष्ट है की बड़ी संख्या में बीपिएल , अन्त्योदय एवं अन्नपूर्णa कार्ड धारियों के पास जॉब कार्ड नहीं है. एपिएल परिवारों के पास तुलनात्मक रूप से जॉब कार्ड्स ज्यादा है.

1.६ परिवार का आकार एवं पलायन की स्थिति : सारणी क्रमांक १.७ से स्पष्ट है की परिवार के आकार का पलायन से गहरा संभंध है. परिवार के आकार में वृद्धि के साथ ही पलायन की सम्भावनाये भी बढ़ जाती है. जिन परिवारों में परिवार संख्या ०५ तक है उनमे पलायन का प्रतिशत २० से कम है. जिन परिवारों में परिवार संख्या ६-९ है उनमे पलायन का प्रतिशत २०+ में है. जिन परिवारों में परिवार संख्या १०+ है उनमे पलायन का प्रतिशत ३०+ है.

1.७ राशन कार्ड के प्रकार एवं पलायन की स्थिति के आधार पर परिवारों का वितरण : सारणी क्रमांक १.8 से स्पष्ट है की पलायन करने वाले परिवारों में सर्वाधिक संख्या(३९%) सबसे गरीब परिवारों की है जिनके

पास अन्त्योदय कार्ड है. दुसरे स्थान पर वे परिवार है जिनके पास गरीबी रेखा के नीचे का कार्ड है. ऐसे परिवारों की संख्या कुल पलायन करने वाले परिवरो की संख्या का २३.५% है. सबसे कम पलायन १३% उन परिवारों से है जिनके पास या तो गरीबी रेखा से उपर के कार्ड है या फिर कोई कार्ड नहीं है .

1.8. ऐसे परिवार जहा बच्चे कमाते है : सर्वे के दौरान एक चिंतित करने वाली सूचना सामने आई वह है ऐसे परिवारों की संख्या जहा बच्चे भी कमाते है. बच्चो को यहाँ १८ वर्ष से कम उम्र वाले पारिवारिक सदस्यों के रूप में परिभाषित किया गया है. सारणी क्रमांक १.९ ऐसे परिवारों की संख्या कुल परिवारों की संख्या का लगभग १७% है.

1.9 पलायन करने वाले परिवारों का प्राथमिक व्यवसाय : सारणी क्रमांक १.१० से स्पष्ट है की पलायन करने वाले अधिकांश: परिवारों(४७.५%) का प्राथमिक व्यवसाय कृषि है . इसके बाद सबसे अधिक निर्भरता(३१.२%) मजदूरी पर है.

भाग २ पलायन करने वाले मजदूरों की विशेषताएँ

2.१ प्रति परिवार पलायन करने वालो की संख्या : प्रति परिवार पलायन करने वालो की संख्या को सारणी क्रमांक २.१ में दर्शाया गया है. इससे स्पष्ट है की सबसे अधिक संख्या(२७.१९%) ऐसे परिवारों की है जिनमे से २ सदस्य पलायन करतें है. इसके बाद ऐसे परिवार हैं जिनसे क्रमशः १ (२२.५८%) और ३(१७.५१%) सदस्य पलायन करतें है. प्रति परिवार औसत पलायन दर २.९६% है.

2.२ लिंग एवं आयु के अनुसार पलायन करने वाले मजदूरों का वितरण : सारणी क्रमांक २.२ से स्पष्ट है की कुल प्रवासी मजदूरों में सबसे अधिक संख्या वयस्कों की है. कुल पलायन करने वाले पुरुषो में वयस्क पुरुषो का प्रतिशत ७९.५% एवं कुल पलायन करने वाली महिलायों में वयस्क महिलायों का प्रतिशत ७३.६% है.

किशोर एवं किशोरियों(१५-१८ वर्ष) का प्रतिशत क्रमश ५.७% एवं ६.३% है. बालक एवं बालिकाओ (६-१४ वर्ष) का प्रतिशत ८.४% एवं १२.६% है. नवजात बालक एवं बालिकायो का प्रतिशत ६.४% एवं ७.५% है.

२.३ शिक्षा के स्तर एवं पलायन के सम्बन्ध को सारणी क्रमांक २.३ मे प्रदर्शित किया गया है. इसमें शिक्षा एवं पलायन के बीच सकारात्मक सम्बन्ध स्पष्ट होता है. पलायन करने वाले श्रमिको में सबसे अधिक प्रतिशत (४३.८%) निरक्षर श्रमिको का है. इसके बाद क्रमश: प्राथमिक (२२%) एवं माध्यमिक (१२.७%) तक शिक्षा प्राप्त मजदूरों के समूह है.

२.४ ग्राम में काम की उपलब्धता एवं पलायन के बीच भी सकारात्मक सम्बन्ध है. जो की सारणी क्रमांक २.४ से स्पष्ट है. पलायन करने वालो में सबसे अधिक प्रतिशत(२६.७%) उन लोगो का है जिन्हें अपने गृहग्राम में काम के सबसे कम अवसर प्राप्त है.(१-३० दिन एक वर्ष में)

२.५ पलायन के माह /मौसम का विवरण: सारणी क्रमांक २.५ से स्पष्ट है की सबसे अधिक पलायन(लगभग ७०%) सितम्बर से फरवरी माह में होता है. यह रबी की फसल का मौसम होता है.

२.६. पलायन स्थल का विवरण :

- सारणी क्रमांक २.६ से स्पष्ट है की ५४% मजदूर ग्रामीण क्षेत्रो में पलायन करते है. जबकि ४५% शहरी क्षेत्रो में जाते है.
- सारणी क्रमांक २.7 से स्पस्ट है की अध्ययन के समय पलायन करने वाले ४७% मजदूर अपने गृह ग्राम वापिस आ चुके थे.
- सारणी क्रमांक २.7 से स्पष्ट है की सबसे अधिक (८४.४%) मजदूर छत्तीसगढ़ राज्य के बाहर के राज्यों में पलायन करते है. १५.६ % मजदूर छत्तीसगढ़ राज्य में ही पलायन करतें है. इनमे से छत्तीसगढ़ राज्य में ही अपने जिले से अलग दुसरे जिलो में पलायन करने वालो का प्रतिशत ५.८% एवं अपने जिले के अंदर ही पलायन करने वालो का प्रतिशत ९.८ % है .

२.७ दूसरे राज्यों में पलायन करने वालो मजदूरों का विवरण : सारणी क्रमांक २.8 से स्पष्ट है की दूसरे राज्यों में पलायन करने वाले मजदूरों में सबसे अधिक प्रतिशत उन मजदूरों का है जो uttarpradesh जाते है. इसके बाद maharashtra , gujrat, panjab, madhya pradesh, jammu एवं anya राज्य है.

२.८ पलायन समय मजदूरी कार्य का विवरण : सारणी क्रमांक २.८ से स्पष्ट है की सबसे अधिक श्रमिक (56%) ईंट भट्टो में काम करते है. इसके बाद canstrakshan (10%) , मिल , लोडिंग , होटल , ढाबा , आदि का नंबर है.

भाग ३. पलायन करने वाले परिवारों/जनसंख्या का एक जेंडर आधारित विश्लेषण :

३.1. पलायन की स्थिति : सारणी क्रमांक ३.१ से स्पष्ट है की ऐसे परिवारों में से जिनकी मुखिया महिलाये है १८.२ % परिवार ही पलायन करते है.

३. २. पंचायतो से पलायन का विश्लेषण : सारणी क्रमांक ३.२ ऐसे परिवार जिनकी मुखिया महिलाये है और जो पलायन करते है , की सबसे अधिक संख्या (१७%) jewraa में है, इसके बाद सोन में १५% एवं जैरामनगर में १३%है.

३.३. विधवा महिला मुखिया के आधार पर परिवारों का वितरण : सारणी क्रमांक ३.३ से स्पष्ट है की कुल ऐसे परिवारों में से जिनकी मुखिया महिलाये है २७ परिवार अर्थात १०% परिवार ऐसे है जिनकी मुखिया विधवा महिलाये है.

३.४. शिक्षा के आधार पर महिला मुखिया वाले परिवारों का वितरण : सारणी क्रमांक ३.४ से स्पष्ट है की पुरुषो की तुलना में महिलाओ में शिक्षा की स्तिथि ज्यादा ख़राब है. महिला मुखिया वाले परिवारों में निरक्षरता ५३% एवं जनसंख्या में निरक्षरता ३०% है.

३.५. जाति के आधार पर महिला मुखिया वाले परिवारों का वितरण : सारणी क्रमांक ३. ५ से स्पष्ट है की सबसे अधिक संख्या ४३.७ % पिछड़ी जाति की है. अनुसूचित जाति की ३१% एवं अनुसूचित जनजाति की २३.५% है.

३.६. राशन कार्ड के आधार पर महिला मुखिया वाले परिवारों की संख्या : सारणी क्रमांक 3.6 से स्पष्ट है की सबसे अधिक संख्या बी पि एल कार्ड धारियों की है ५६%. इसके बाद अन्तोदय कार्ड धारियों की १३.४% अन्नपूर्णा कार्ड धारियों की संख्या ४.१% एवं एपि एल कार्ड धारियों की संख्या ९.७% है.

३.७. परिवार के आकार के आधार पर महिला मुखिया परिवारों का वितरण : सारणी क्रमांक ३.7 से स्पष्ट है की सबसे अधिक संख्या(४३%) ऐसे परिवारों की है जिनमे ४-६ तक सदस्य है. २२ अर्थात ८.२% परिवार ऐसे भी है जहा अकेली महिला ही परिवार में है.

३.८. कमाने वाले पुरुष सदस्यों की संख्या के आधार पर महिला मुखिया परिवारों का वितरण : सारणी क्रमांक 3.8-3.११ से स्पष्ट है की १३.४ % परिवार ऐसे है जहा कोई पुरुष सदस्य कमाने वाले नहीं है.लगभग ७२% परिवार ऐसे है जहा एक से अधिक महिला सदस्य कमाने वाले है. लगभग १८% परिवार ऐसे है जहा बालक सदस्य कमाते है और लगभग १२% परिवार ऐसे है जहा बालिका सदस्य कमाती है.

३.९. प्राथमिक व्यवसाय के आधार पर महिला मुखिया परिवारों का वितरण : सारणी क्रमांक 3.12 से स्पष्ट है की सबसे अधिक संख्या ४४.४ % कृषि कार्य करने वालो की है . ३७.३ परिवारों का प्राथमिक व्यवसाय मजदूरी है,

३.१०. जॉब कार्ड के आधार पर महिला मुखिया परिवारों का वितरण : सारणी क्रमांक ३.१३ से स्पष्ट है की ६१.२ % परिवारों के पास जॉब कार्ड है और ३८.८% परिवारों के पास नहीं है.

३.११. कमाने वाले बच्चो की संख्या के आधार पर परिवारों का वितरण : सारणी क्रमांक ३.१४ से स्पष्ट है की २१% परिवार ऐसे है जहा बच्चे परिवार की आय में योगदान देते है.

<u>भाग ४. ईंट भट्टो में काम करने वाले मजदूरों का विशेष विश्लेषण :</u>

पूर्व में बताया गया है की पलायन करने वाले मजदूरों की सबसे बड़ी संख्या ईंट भट्टो में काम करती है .अतः इस भाग में उन मजदूरों का विशेष विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है.

१. सारणी क्रमांक 4.१ से स्पष्ट है की
पलायन करने वाले परिवारों में से में से ६२% से भी ज्यादा ईंट भट्टो में काम करने जाते है.
पलायन करने वाले कुल शर्मिको में से ६७% ईंट भट्टो में काम करने जाते है
पलायन करके ईंट भट्टो में कम करने जाने वाले श्रमिको में से ३/४ श्रमिक कुल तीन पंचायतो में से है : जोंथरा, टिकारी एवं ओखर .
१०% से अधिक परिवार ऐसे है जिनसे ५ या अधिक सदस्यों ने पलायन किया है.
पलायन करने वाले समूह के आकार में भिन्नता है. एक पंचायत सोन में ६०% से अधिक परिवारों से एक ही व्यक्ति ने पलायन किया है.

४.२. **पलायन करने वाले व्यक्तियों की संख्या के आधार पर परिवारों का वितरण** : सारणी क्रमांक ४.२ से स्पष्ट है की २७० पलायन करने वाले परिवारों में से ४९ ऐसे परिवार है जिनमे से एक ही व्यक्ति ने पलायन किया है एवं अन्य में से एक या अधिक सदस्य गए . इस प्रकार से ईंट भट्टो के लिए पलायन करने परिवार ज्यादातर समूह में ही पलायन करते है.

४.३. ईंट भट्टो में पलायन करने वाले श्रमिको का परिवार के मुखिया से सम्बन्ध : सारणी क्रमांक ४.३

४.4. **<u>ईंट भट्टो को पलायन करने वालो का लिंग आधारित विवरण</u>** : सारणी क्रमांक ४.४ से स्पष्ट है की ईंट भट्टो के लिए पलायन करने वालो में ६०% पुरुष एंड ४०% महिलाये है.

४. ५. **<u>ईंट भट्टा मजदूरों का पलायन की अवधी के आधार पर वितरण</u>** : सारणी क्रमांक ४.५ से स्पष्ट है की सबसे अधिक पलायन(४४%) ६०-९० दिवस की अवधी के लिए होता है. इसके बाद १८० दिवसों के लिए लगभग १८% पलायन होता है.

<u>४.६. लिंग एवं पलायन की अवधि के आधार पर वितरण</u> : सारणी क्रमांक ४.६ से स्पष्ट है की पुरुष एवं महिला में अलग अलग पलायन में भी सबसे अधिक पलायन ६०-९० दिवस के लिए ही होता है.

<u>४.७. पलायन के समय के आधार पर ईंट भट्टा मजदूरों का वितरण</u> : सारणी क्रमांक ४.७ से स्पष्ट है की सबसे अधिक पलायन सितम्बर से फरवरी के माह के बीच होता है.

४.8 ईंट भट्टा मजदूरों का आयु के आधार पर वितरण :

४.9. ईंट भट्टामजदूरों का जाति के आधार पर वितरण : सारणी क्रमांक ४.9 से स्पष्ट है की सबसे अधिक संख्या ५८.६% पिछड़े वर्ग की है. जन जातीय १२.२ % एवं अनुसूचित जाति २८.५% है. सामान्य वर्ग की संख्या मात्र .३ % है.

भाग ५ प्रमुख निष्कर्ष :

- मस्तुरी विकासखंड में पलायन करने वाले परिवारों का कुल प्रतिशत २१% है.
- सारणी क्रमांक ***१.११*** के अनुसार नॉन वोर्कार्स की कुल संख्या २१६ है जिनकी आयु १४ वर्ष या उससे नीचे है. किन्तु सारणी क्रमांक १.१२ में नॉन वोर्कार्स की संख्या १९९ है. इसका अर्थ है की १७ बाल श्रमिक है. साथ ही ७६ किशोर श्रमिक भी है जिनकी आयु १५-१८ वर्ष के बीच है. ऐसे परिवारों की संख्या जहा बच्चे भी कमाते है १७% है . बच्चो को यहाँ १८ वर्ष से कम उम्र वाले पारिवारिक सदस्यों के रूप में परिभाषित किया गया है.
- ग्राम में काम की उपलब्धता का पलायन से गहरा सम्बन्ध है. पलायन करने वालो में सबसे अधिक प्रतिशत(२६.७%) उन लोगो का है जिन्हें अपने गृहग्राम में काम के सबसे कम अवसर प्राप्त है.(१-३० दिन एक वर्ष में) . यह बात एक और तथ्य से अधिक स्पष्ट हो जाति है . अधिकांश पलायन सितम्बर से फरबरी की अवधि में होता है.यह समय रबी की फसल समय होता है . मस्तुरी विकासखंड में कुल कृषि क्षेत्र के मात्र ८ हिस्से में ही वर्ष में दो फ सले ली जाती है एवं यह फसल खरीफ की होती है. अतः रबी की फसल के समय पलायन सबसे ज्यादा होता है. मस्तुरी विकासखंड में ४७.५% परिवारों का प्राथमिक व्यवसाय कृषि है और ३१.२ % परिवारों का मजदूर जिनमे से अधिकांशत: कृषि संबंधित मजदूरी पर निर्भर होंगे. यह परिस्थितिया पलायन को बढ़ावा देती हैं. गृह ग्राम में काम की उपलब्धता किस प्रकार से पलायन को प्रभावित करती है इसका एक अन्य तथ्य भी सर्वे में सामने आया है. जिन ग्राम पंचायतो के आस पास उद्योग है वहा पलायन का प्रतिशत उन ग्राम पंचायतो की अपेक्षा बहुत कम है जिनके आस पास उद्योग नहीं है.
- गरीबी और पलायन का भी गहरा सम्बन्ध है. पलायन करने वाले परिवारों में सर्वाधिक संख्या(३९%) सबसे गरीब परिवारों की है जिनके पास अन्त्योदयकार्ड है. दूसरे स्थान पर वे परिवार है जिनके पास गरीबी रेखा के नीचे का कार्ड है. ऐसे परिवारों की संख्या कुल पलायन करने वाले परिवारों की संख्या का २३.५% है. सबसे कम पलायन १३% उन परिवारों से है जिनके

पास या तो गरीबी रेखा से उपर के कार्ड है या फिर कोई कार्ड नहीं है. सर्वेक्षण में आर्थिक स्थिति एवं जॉब कार्ड के बीच भी चिंताजनक सम्बन्ध सामने आया है . बड़ी संख्या में बीपिएल , अन्त्योदय एवं अन्नपूर्णा कार्ड धारियों के पास जॉब कार्ड नहीं है. एपिएल परिवारों के पास तुलनात्मक रूप से जॉब कार्ड्स ज्यादा है.

- सारणी क्रमांक ५.१ से स्पष्ट है की जिनके पास उत्पादन के साधन नहीं होते एवं जिनके पास रोज़गार भी नहीं होता वहा सबसे ज्यादा पलायन करते है. एक तिहाई से ज्यादा अकार्यकुशल श्रमिक पलायन करते है. कुल पलायन करने वाले परिवारों में ५०% ऐसे परिवार है जिनका प्राथमिक व्यवसाय मजदूरी है. सबसे कम पलायन के केसेस उन परिवारों से है जिनका अपना कोई स्थायी व्यवसाय है जैसे की दुकान.कुछ केसेस में सरकारी एवं प्राइवेट नौकरी करने वाले भी पलायन कर रहे है.

- सामाजिक स्थिति का भी पलायन से सम्बन्ध सर्वेक्षण में सामने ये है. सामान्य वर्ग से पलायन लगभग नहीं के बराबर है.

- शिक्षा एवं पलायन में भी सकरात्मक सम्बन्ध है. पलायन करने वालो में सबसे ज्यादा संख्या निरक्षर लोगो की है. uchh शिक्षित लोगो में पलायन नही है.

- परिवार के आकार एवं पलायन में सम्बन्ध स्पष्टता से सामने आया है. अधिक सदस्य वाले परिवारों में पलायन अधिक है.

- पलायन करने वाले सबसे अधिक श्रमिक ईंट भट्टो में काम करने के लिए जाते हैं एवं अधिकांश श्रमिक छत्तीसगढ़ के बाहर दूसरे राज्यों में पलायन करते है. ईंट भट्टो में काम करने वाले परिवारों एवं जनसंख्या की विशेषताएँ लगभग वैसी ही है जैसी पलायन करने वाले संपूर्ण श्रमिक समूह की

- लगभग १४% पलायन करने वाले परिवार ऐसे है जिनकी मुखिया महिलाये है. कुल पलायन करने वाली जनसंख्या में भी महिलायों का % है. महिला मुखिया परिवारों में १२ % परिवार ऐसे है जहा बालिकाए भी परिवार की आय में योगदान देने हेतु कार्य करती है. महिलाये शिक्षा के स्तर में पुरुषो से पीछे है.